Masters of Arts (Hindi)
Session 2020-21

Programme Specific outcomes-

PSO-1: भाषा उच्चारण में निपुणता ,व्याकरण सम्बन्धी अवधारणा की स्पष्टता ।

PSO-2: प्राचीन एवं नवीन हिन्दी कवियों की देन के गहन ज्ञान की प्राप्ति ।

PSO-3: हिन्दी के भाषिक और साहित्यिक रूप के साथ साथ उसके प्रयोजनमूलक रूपों - बैंक,रेलवे ,समाचार पत्र ,रेडियो ,टेलीविज़न ,मीडिया ,अनुवाद की जानकारी एवं रोज़गार के अवसर ।

PSO-4: भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र की अवधारणा, विभिन्न समीक्षा पद्दतियों का सम्यक ज्ञान । रस,शब्द शक्तियों और विविध वादों का गहन अध्ययन ।

PSO-5: भाषा और भाषा विज्ञान,समाज विज्ञान ,मनोभाषा विज्ञान ,शैलिविज्ञान ,रूपांतरण प्रजनक ,व्यवस्था परक ,प्रकार्य परक व्याकरण की समस्त जानकारी एवं भाषा वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य का विश्लेषण करने का सम्पूर्ण ज्ञान ।

PSO-6: देवनागरी लिपि का ज्ञान ,समास,सन्धि,उपसर्ग , प्रत्यय ,लिंग,वचन, कारक की व्यावहारिक जानकारी ।

PSO-7: कोष निर्माण के सिद्दांत ,प्रक्रिया ,विभिन्न कोश ग्रन्थ और विभिन्न कोशकारों का सामान्य परिचय एवं व्यावहारिक ज्ञान में दक्षता ।

PSO-8: हिन्दी की प्रयोजन मूलकता को सिद्ध करती पत्रकारिता के क्षेत्र की सैद्दांतिक और व्यावहारिक जानकारी ,सम्पादन ,प्रूफ पठन,समाचार लेखन व वाचन ,उद्घोषणा:लेखन व वाचन, संवाद ,विज्ञापन,फीचर ,रिपोर्ताज ,पटकथा , डाक्यूमेंट्री ,नाटक लेखन का व्यावहारिक ज्ञान ।

PSO-9: राजभाषा शिक्षण के अंतर्गत राजभाषा के अधिनियम ,राष्ट्रपति के आदेशों संवैधानिक नियमों की सम्पूर्ण जानकारी और कार्यालयी टिप्पण ,प्रारूपण ,संक्षेपण ,विस्तारण, पत्र लेखन एवं पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्दांत की विस्तृत जानकारी

FACULTY OF LANGUAGES

SYLLABUS

of

M.A.Hindi

(Semester I)

(Under Continuous Evaluation System)

Session: 2020-21

The Heritage Institution

KANYA MAHA VIDYALAYA JALANDHAR

(Autonomous)

SCHEME AND CURRICULUM OF EXAMINATIONS OF

TWO YEAR DEGREE PROGRAMME

Masters of Arts in Hindi

Semester I

Session 2020-21

M.A. (Hindi) Semester I							
Course Code	**Course Name**	**Course Type**	**Marks**				**Examination time (in Hours)**
			Total	**Ext.**		**CA**	
				L	**P**		
MHIL-1261	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	C	80	64	-	16	3
MHIL -1262	हिन्दी साहित्य का इतिहास (खंड- एक)	C	80	64	-	16	3
MHIL -1263	भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यलोचन	C	80	64	-	16	3
MHIL - 1264	प्रयोजनमूलक हिन्दी	C	80	64	-	16	3
MHIL -1265(Opt---) (विद्यार्थी अग्रलिखित विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुन सकता है)	हिन्दी नाटक और रंगमंच (Opt-i)	O	80	64	-	16	3
	कोश विज्ञान (Opt-ii)	O	80	64	-	16	3
	पंजाब का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य (Opt-iii)	O	80	64	-	16	3
Total			**400**				

C-Compulsory
O-Optional

Scheme of Course

Session 2020-21

M.A. (Hindi)

SEMESTER-I

MHIL 1261 प्रश्नपत्र–एक प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

MHIL 1262 प्रश्नपत्र –दो हिन्दी साहित्य का इतिहास (खण्ड–एक)

MHIL 1263 प्रश्नपत्र –तीन भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

MHIL 1264 प्रश्नपत्र –चार प्रयोजनमूलक हिन्दी

MHIL 1265 प्रश्नपत्र –पाँच वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प–एक, हिन्दी नाटक और रंगमंच

अथवा

विकल्प दो: कोश विज्ञान

अथवा

विकल्प तीन: पंजाब का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL - 1261

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Course Outcomes :

पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी निम्नलिखित लाभ प्राप्त कर सकते हैं :

CO-1: हिन्दी के प्राचीन कवियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा उनका हिंदी साहित्य में योगदान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते है |

CO-2: हिन्दी के मध्यकालीन कवियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा भक्त कवियों का हिन्दी साहित्य में योगदान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते है |

CO-3: प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों के काव्य में आधुनिकता बोध के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

CO-4: प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों की सांस्कृतिक चेतना सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं |

CO-5:सूफी काव्य परम्परा की विशेषताओं और महत्व के सम्बन्ध में जायसी के काव्य के महत्व के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)
Session 2020 -21

Course Code: MHIL - 1261

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Total: 80

CA: 16

समय: तीन घंटे TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है । इसमें चार- चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा । भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों / पांच पृष्ठों में देना होगा ।

इकाई -एक

व्याख्या

निर्धारित कवि एवं पाठ्य पुस्तक:

पाठ्य पुस्तक - 'काव्य मंजूषा' सम्पादक प्रो॰ सुधा जितेन्द्र ,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,2014

व्याख्या के लिए निर्धारित कवि –

1.अमीर खुसरो

2.कबीर

3.जायसी

इकाई -दो

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

अमीर खुसरो :

– अमीर खुसरो और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं

– हिंदी के आदि कवि :अमीर खुसरो

– अमीर खुसरो के काव्य की मूल संवेदना

– अमीर खुसरो के काव्य की भाषा

इकाई -तीन

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

कबीर:

– कबीर और उनका काव्य परिचय तथा विशेषताएं

– कबीर काव्य का दार्शनिक पक्ष

- क्रांतिकारी कवि कबीर

- कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण

- कबीर का रहस्यवाद

- कबीर काव्य का कलात्मक पक्ष

- कबीर की भक्ति भावना

इकाई -चार

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

जायसी:

– जायसी और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं

– सूफी काव्य परम्परा में जायसी का स्थान

– जायसी की प्रबन्ध योजना , पद्मावत का महाकाव्यत्व

– जायसी के काव्य में विरह वर्णन : नागमती का विशेष सन्दर्भ

– जायसी के काव्य में प्रेमाभिव्यंजना एवं रहस्य

– जायसी के काव्य में लोक संस्कृति

– पद्मावत का काव्य सौष्ठव

सहायक पुस्तकें:

1.आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी |

2. गोपीचंद नारंग, अमीर खुसरो का हिंदी काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |

3. रामनिवास चंडक, कबीर :जीवन और दर्शन, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी |

4. परशुराम चतुर्वेदी, कबीर साहित्य चिंतन, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद|

5. नज़ीर मुहम्मद, कबीर के काव्य रूप, भारत प्रकाशन, अलीगढ |

6. रघुवंश, कबीर एक नई दृष्टि, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद|

7. रामकुमार वर्मा, कबीर एक अनुशीलन, साहित्य भवन, इलाहाबाद|

8. मनमोहन गौतम, पद्मावत का काव्य वैभव, मैकमिलन कंपनी, दिल्ली |

9. रामपूजन तिवारी, जायसी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |

10. शिवसहाय पाठक, हिंदी सूफी काव्य का समग्र अनुशीलन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली |
11. जयदेव , सूफी महाकवि जायसी, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ |
12. डॉ.हरमहेन्द्र सिंह बेदी, कालजयी कबीर, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1262

हिन्दी साहित्य का इतिहास (खण्ड–एक)

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: इतिहास की दृष्टि से साहित्यिक स्तर की रचनाओं का मूल्यांकन करना साहित्य का इतिहास कहलाता है। यदि आधुनिक साहित्य के स्वरूप को जानना है तो यह अत्यंत आवश्यक है कि उसके विगत का विवरण भी जाना जाए।

CO-2: विगत का विवरण एवं बोध जिसने अतीत के जीवन को प्रभावित किया हो और भविष्य के लिए भी संकेत हो, साहित्य का इतिहास कहलाता है।

CO-3: अत: वर्तमान भाषा और साहित्य के विकास को जानने के लिए यह प्रश्न पत्र अनिवार्य है।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)
Session 2020-21

Course Code: MHIL-1262

Course Title: हिन्दी साहित्य का इतिहास (खण्ड- एक)

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है| प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा | प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा | प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई - एक

इतिहास दर्शन:
-साहित्येतिहास, लेखन : अर्थ एवं अभिप्राय |
-हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा |
-हिंदी साहित्य का इतिहास: काल विभाजन, सीमा निर्धारण और नामकरण |

इकाई - दो

आदिकाल:
-आदिकाल की पृष्ठभूमि, नामकरण की समस्या, विभिन्न परिस्थितियां,
साहित्यिक प्रवृतियां
सिद्ध, नाथ, जैन साहित्य (सामान्य परिचय)
रासो काव्य , प्रमुख प्रवृत्तियां
लौकिक काव्य धारा: परिचय एवं प्रवृत्तियां
प्रमुख कवि (चंदवरदाई, जगनिक, अमीर खुसरो, विद्यापति) (व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय)

इकाई-तीन

-पूर्व भक्तिकाल: पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियां

- निर्गुण एवं सगुण काव्यधाराएँ: प्रमुख विशेषताएं |
- प्रमुख एवं गौण कवि: (कबीर, रविदास, दादू, सुंदरदास, कुतुबन, मंझन, जायसी, तुलसीदास, सूरदास, नंददास)
- भक्तेतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य |

इकाई- चार

रीतिकाल: नामकरण और काल सीमा निर्धारण

- उत्तरमध्यकाल पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियां
- रीतिबद्ध,रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं का परिचय एवं प्रवृत्तियां
- प्रमुख एवं गौण कवि: (केशव, बिहारी, देव, मतिराम, घनानंद, बोधा, आलम, ठाकुर, गुरु गोबिंद सिंह, रज्जबदास)

सहायक पुस्तकें:

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आ.रामचंद्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी |
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली |
3. रीतिकाव्य की भूमिका: डॉ. नगेन्द्र
4. साहित्य इतिहास का दर्शन, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्र परिषद्, पटना |
5. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायण बेणी माधव, इलाहाबाद |
6. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग-1,2,3 प. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, ब्रह्मनाल, वाराणसी |
7. हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (भाग-1 से 16) , नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी |
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास, हुकुमचंद राजपाल, विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली |
9. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |
10. साहित्य और इतिहास दृष्टि: मैनेजर पांडेय
11. मध्यकालीन बांध का स्वरूप: हजारी प्रसाद द्विवेदी |
12. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग 1,2): विश्वनाथ प्रसाद मिश्र |
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास: पूरनचंद टंडन, विनीता कुमारी |
14. आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि: राममूर्ति त्रिपाठी |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1263

भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: इस प्रश्नपत्र में दिए गए पाठ्यक्रम का उद्देश्य साहित्य सृजन के मूल सिद्धांतों के संदर्भ में प्राचीन काव्यशास्त्रीय आचार्यों की स्थापनाओं एवं उनके द्वारा दिए गए सिद्धांतों से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

CO-2: यद्यपि वर्तमान समय में साहित्य के स्वरूप उसके सृजन सिद्धांतों, भाषा एवं शैली में परिवर्तन के परिणामस्वरुप आलोचना के मानदण्डों और समीक्षा पद्धतियों में बदलाव आ चुका है किन्तु विद्यार्थियों को साहित्य सृजन एवं समीक्षा के क्रमिक विकास की जानकारी देना भी अत्यावश्यक है।

CO-3: भारतीय काव्यशास्त्र में हम साहित्य सृजन एवं समीक्षा के सम्बन्ध में विद्वान आचार्यों के द्वारा दिए गए मतों एवं सिद्धांतों के क्रमिक विकास, साहित्य पर उनके प्रभाव और उनके योगदान तथा उनकी सीमाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं।

CO-4: साहित्य सृजन और समीक्षा में नए रुझान और परिवर्तनों के प्रति रुझान उत्पन्न करते हुए साहित्य की नई भाव-भूमि से जोड़ने के लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न विचारधाराओं पर आधारित आधुनिक समीक्षा पद्धतियों को भी सम्मिलित किया गया है।

CO-5: हिन्दी भाषा से जुड़े किसी भी व्यवसाय चाहे वह अध्यापन का हो या समीक्षा का, पत्रकारिता का हो या रचनात्मक लेखन का उसमें प्रदर्शन के लिए काव्यशास्त्र के मूल सिद्धांतों की जानकारी विद्यार्थियों के ज्ञान की सुदृढ़ आधारशिला है किसी भी भवन की मजबूती नींव की तरह।

CO-6: **रस** अलंकार. छन्द, ध्वनि वक्रोक्ति, औचित्य, प्रतीक, बि□ब इत्यादि का ज्ञान विद्यार्थियों को रचनात्मक अभिव्यक्ति में परोक्ष एवं सूक्ष्म भूमिका निभाने वाले तत्वों की जानकारी उन्हें सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल दोनों प्रदान करती है।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1263

Course Title: भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा | प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा | प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई - एक

काव्य :

काव्य-लक्षण, काव्य तत्व तथा रस का स्वरूप के साथ रस के अंग काव्य-हेतु,काव्य प्रयोजन,काव्य के प्रकार |

इकाई - दो

रस सम्प्रदाय : रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा |
अलंकार सम्प्रदाय: परम्परा और मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण |

इकाई - तीन

ध्वनि सम्प्रदाय: ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धान्त की स्थापनाएं, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद |

रीति सिद्धांत: रीति की अवधारणा, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएं, काव्य गुण,रीति एवं शैली |

वक्रोक्ति सिद्धांत: वक्रोक्ति की अवधारणा एवं मान्यताएं, वक्रोक्ति के भेद

इकाई - चार

औचित्य सिद्धांत : औचित्य से अभिप्राय**:** औचित्य का स्वरूप एवं भेद, प्रमुख स्थापनाएं,काव्य में औचित्य का स्थान एवं महत्व |

हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृतियां : शास्त्रीय, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय |

सहायक पुस्तकें:

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र: देवेन्द्र नाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली |
2. आलोचक और आलोचना: बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |
3. हिंदी समीक्षा: स्वरूप और सन्दर्भ, रामदरश मिश्र, मैकमिलन कम्पनी, दिल्ली |
4. आधुनिक हिंदी समीक्षा-प्रकीर्णक से पद्धति तक, यदुनाथ सिंह, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली |
5. हिंदी आलोचना का सिद्धान्त, मक्खन लाल शर्मा, शब्द और शब्द प्रकाशन,दिल्ली |
6. भारतीय समीक्षा सिद्धांत, सूर्य नारायण द्विवेदी, संजय बुक सैंटर,वाराणसी |
7. भारतीय साहित्य दर्शन,सत्यदेव चौधरी, साहित्य सदन, देहरादून |
8. भारतीय काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |
9. काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |
10. रस सिद्धांत की दार्शनिक एवं नैतिक व्याख्याएं, तारकनाथ बाली, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1264

प्रयोजनमूलक हिन्दी

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है। यह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भी है। अत: स्वाभाविक ही है की चुनिन्दा भाषाओं में से यह एक महत्वपूर्ण भाषा है।

CO-2: भारत की अभिजात राष्ट्र भाषा होने के कारण देश के प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग ही राष्ट्रीयता की दृष्टि से अत्युक्त भी है।

CO-3: हिन्दी राज भाषा से लेकर रेलवे स्टेशन, मन्दिर, धार्मिक स्थलों तक ही सीमित नहीं बल्कि तकनीकी शिक्षा, कानून और न्यायालय, वाणिज्य, व्यापार सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है।

CO-4: इस प्रश्न पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी भाषा के सभी रूपों का गहनतम ज्ञान प्राप्त कर भाषा स□बन्धी क्षेत्रों में नौकरी पा सकता है।

CO-5: भाषा के विविध क्षेत्रों (कार्यालयी, व्यवसायिक, प्रशासनिक, राजकीय) में पारंगत हो सकता है।

CO-6: क□प्यूटर व मीडिया के क्षेत्र में भी रोज़गार प्राप्त कर हो सकता है।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1264

Course Title: प्रयोजनमूलक हिन्दी

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा | प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा | प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई - एक

पाठ्य विषय :

कामकाजी हिन्दी
-हिंदी के विभिन्न रूप-संचार : भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा |
-कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख रूप : प्रारूपण,पत्रलेखन, संक्षेपण,पल्लवन, टिप्पण |
-पारिभाषिक शब्दावली -स्वरूप एवं महत्व,पारिभाषिक शब्दावली -निर्माण के सिद्धांत |
-ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली निर्धारित क्षेत्र: बैंक, रेलवे, कम्प्यूटर और सामान्य प्रशासनिक शब्दावली (संलग्न)

इकाई - दो

-हिंदी कंप्यूटिंग: कम्प्यूटर की आधारभूत व्यावहारिक जानकारी |
- कम्प्यूटर: परिचय उपयोग तथा क्षेत्र
-इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र |
-वेब पब्लिशिंग |

इकाई - तीन

-इंटरनेट एक्स्प्लोरर अथवा नेटस्केप नेंवीगेटर
-लिंक, ब्राउज़िंग, ई-मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी सॉफ्टवेयर, पैकेज |

इकाई - चार

कार्यालयी टिप्पणियों के हिन्दी रूप सम्बन्धी शब्दावली, पृ.73-76 तक, कम्प्यूटर शब्दावली पृ.144- 147 तक |
परिभाषिक शब्दावली हेतु अनुशंसित पुस्तक-हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर |

सहायक पुस्तकें:

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी- विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी:सिद्धांत और प्रयोग दंगल झाल्टे, विद्या विहार, नई दिल्ली |
3. राजभाषा विविध, माणिक मृगेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |
4. ज्ञान शिखा (प्रयोजनमूलक हिन्दी विशेषांक), संपा. डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन |
5. अनुवाद प्रकिया, डॉ. रीता रानी पालीवाल, साहित्य निधि, दिल्ली |
6. व्यावहारिक हिन्दी, कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
7. कंप्यूटर और हिन्दी, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
8. संक्षेपण और विस्तारण, कैलाशचन्द्र भाटिया, सुमन सिंह प्रभात प्रकाशन, दिल्ली |
9. प्रयोजनमूलक हिन्दी, रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |
10. प्रयोजनमूलक हिन्दी, संरचना एवं अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
11. प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिन्दी, डॉ. ओमप्रकाश सिंहल, जगत राम प्रकाशन, दिल्ली |

12 अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं, भोलानाथ तिवारी/ओमप्रकाश गाबा,शरद प्रकाशन, दिल्ली |
13. राजभाषा हिन्दी, डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |
14.प्रशासनिक कार्यालय की हिन्दी, डॉ. रामप्रकाश/डॉ. दिनेश कुमार गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली|
15. व्यावहारिक हिन्दी, डॉ. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली |
16. प्रयोजनमूलक हिन्दी, कमल कुमार बोस, क्लासिकल पब्लिशिंग, नई दिल्ली |
17. हिन्दी की मानक वर्तनी कैलाश चन्द्र भाटिया, रचना भाटिया, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली |
18. कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग : सिद्धांत और तकनीक, राजीव, राजेन्द्र कुमार, साहित्य मंदिर, दिल्ली |
19.प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. राजनाथ भट्ट, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1265

(वैकल्पिक अध्ययन)

विकल्प -एक

हिन्दी नाटक और रंगमंच

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: नाटक हिन्दी गद्य साहित्य की अन्यतम विधा है। हिन्दी में नाटकों का प्रारंभ भारतेन्दु से माना जाता है।

CO-2: भारतेन्दु युग के नाटककारों ने लोक चेतना के विकास के लिए नाटकों की रचना की ताकि उस समय की सामाजिक समस्याओं को नाटकों में अभिव्य€त किया जा सके।

CO-3: इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक काल में भारतेन्दु युग में नाटकों के विकास तथा रंगमंच के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा महान नाटककारों भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद तथा लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का अध्ययन करेंगे।

CO-4: यह प्रश्न पत्र विद्यार्थियों की रंगमंच के प्रति रुचि उत्पन्न करेगा और उनकी सृजनात्मक क्षमता को उभारने में मदद करेगा।

Masters of Arts (HINDI)(Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प -एक

Course Title: हिन्दी नाटक और रंगमंच

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा | प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा | प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई - एक

व्याख्या एवं अध्ययन के लिय निर्धारित पुस्तकें :

(क) अंधेर नगरी: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली |
(ख) ध्रुवस्वामिनी: जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी |
(ग) एक सत्य हरिश्चन्द्र: लक्ष्मी नारायण लाल, राजपाल एंड संस |

इकाई - दो

भारतेंदु का रंगमंच : सामर्थ्य और सीमाएं

पारसी रंगमंच, पृथ्वी थियेटर, नुक्कड़ नाटक, रेडियो नाटक
भारतेंदु की नाट्य चेतना
अंधेर नगरी का मुख्य सन्दर्भ
अंधेर नगरी में भारतेंदु युगीन विसंगतियों की अभिव्यक्ति
अंधेर नगरी में यथार्थ बोध
अंधेर नगरी में व्यंग्य भाषा, शैली
अंधेर नगरी का नाट्य शिल्प, प्रतीक विधान |

इकाई - तीन

जयशंकर प्रसाद : नाट्य यात्रा में ध्रुवस्वामिनी का महत्वाँकन
ध्रुवस्वामिनी: इतिहास और कल्पना का योग
ध्रुवस्वामिनी: राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना
ध्रुवस्वामिनी: रंगमंचीयता
ध्रुवस्वामिनी: पात्र परिकल्पना, गीत योजना, भाषा-शैली
ध्रुवस्वामिनी: ध्रुवस्वामिनी का प्रबंधकीय एवं राजनैतिक कौशल

इकाई - चार

लक्ष्मीनारायण लाल : नाट्ययात्रा में 'एक सत्य हरिश्चन्द्र'
एक सत्य हरिश्चन्द्र : शीर्षक की सार्थकता एवं प्रासंगिकता
एक सत्य हरिश्चन्द्र : समस्या चित्रण
एक सत्य हरिश्चन्द्र : अभिनेयता
एक सत्य हरिश्चन्द्र : पात्र परिकल्पना
एक सत्य हरिश्चन्द्र : गीत योजना, भाषा शैली

सहायक पुस्तकें :

1. भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास, डॉ. अज्ञात, पुस्तक संस्थान, कानपुर |
2. पारसी हिंदी रंगमंच, लक्ष्मीनारायण लाल, राजपाल एंड संस, दिल्ली |
3. भारतेंदु हरिश्चन्द्र, रामविलास शर्मा,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
4. नाटककार भारतेंदु की रंग कल्पना, सत्येन्द्र तनेजा, भारतीय भाषा प्रकाशन, दिल्ली |
5. प्रसाद के नाटकों का पुनर्मूल्यांकन, सिद्धनाथ कुमार, ग्रन्थथम्, कानपुर |
6. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक और रंगमंच, दयाशंकर, पीताम्बर पब्लिशिंग, दिल्ली |
7. लक्ष्मीनारायणलाल, रघुवंश, दिल्ली : लिपि प्रकाशन |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प–दो

कोश विज्ञान

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: कोश विज्ञान की उत्पत्ति, अर्थ, पर्याय, विलोम आदि जानने का सबसे सरल, उपयोगी एवं अनुकरणीय माध्यम है।

CO-2: इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी कोश की उपयोगिता और कोश और व्याकरण के अन्तरस□बन्ध के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त कर सकता है।

CO-3: कोश के निर्माण की प्रक्रिया, कोश के प्रकार, कोश निर्माण में आने वाली कठिनाइयों के बारे में ज्ञान अर्जित कर सकता है

CO-4: कोश विज्ञान के साथ, ध्वनि, व्याकरण व्युत्पत्ति शास्त्र और अर्थ विज्ञान का गहन अध्ययन–विशलेषण करने में सक्षम हो सकता है।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प - दो

कोष विज्ञान

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है| प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा | प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा | प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई - एक

पाठ्य विषय :

- कोष, परिभाषा और स्वरूप, कोष की उपयोगिता,कोष और व्याकरण का अंत: सम्बन्ध |

इकाई - दो

- कोष के भेद- समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोष, एककालिक और कालक्रमिक कोष, पारिभाषिक कोष, व्युत्पत्ति कोष, समांतर कोष, अध्येताकोष, विश्वकोष, बोलीकोष |

इकाई - तीन

- कोष- निर्माण की प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रवृष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पति, अर्थ, पर्याय, चित्र प्रयोग, उप-प्रवृष्टियां संक्षिप्तियां, सन्दर्भ और प्रतिसंदर्भ |
- रूप अर्थ सम्बन्ध : अनेकार्थकता, समनार्थकता, समनामता, समध्वन्यात्मकता,विलोमता |

इकाई - चार

-कोष निर्माण की समस्याएं : समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोषों के संदर्भ में, अलिखित भाषाओँ का कोष-निर्माण |

-कोशविज्ञान और विषयों का सम्बन्ध : कोशविज्ञान और स्वनविज्ञान, व्याकरण, व्युत्पत्ति शास्त्र और अर्थविज्ञान का सम्बन्ध |

सहायक पुस्तकें :

1.डॉ. भोलानाथ तिवारी, कोष और उसके प्रकार, दिल्ली : साहित्य सहकार|

2.डॉ. कामेश्वर शर्मा, हिन्दी की समस्याएं, पटना :नोवेल्टी एंड कम्पनी |

3.कोष विज्ञान,प्रकाशन केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा |

4.डॉ. हेमचन्द्र जोशी, हिंदी के कोष और कोशशास्त्र के सिद्धांत-राजर्षि अभिनन्दन ग्रंथ, दिल्ली: प्रथम संस्करण |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प-तीन

पंजाब का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: हिन्दी भाषा और साहित्य के उत्थान में हिन्दी भाषी प्रदेशों का ही नहीं अपितु हिन्दीतर प्रदेशों का भी बहुत योगदान है।

CO-2: पंजाब का इस क्षेत्र में अवदान अनुकरणीय है।

CO-3: इस प्रशनपत्र में पंजाब के हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि, इतिहास के अतिरि€त विद्यार्थी, गुरु काव्यधारा, राम काव्यधारा, कृष्ण काव्यधारा व सूफी काव्यधारा के अधययन के साथ-साथ गुरुमुखी लिपि में उपलŽध भ€त कालीन गध्य साहित्य का ज्ञानार्जन कर सकेगा।

CO-4: गुरुमुखी लिपि में उपलŽध दरबारी काव्य तथा श्री मद् भगवदगीता के संदर्भ में अनुवाद एवं भाष्य का अध्ययन कर सकेगा।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प - तीन

Course Title:पंजाब का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है | प्रथम भाग अनिवार्य है | प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार- चार अंकों के छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा | प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/ दो पृष्ठों में देना होगा | भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा | प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों/पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई - एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र :

पंजाब के हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि, परम्परा, इतिहास और काल विभाजन - नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य तथा लौकिक साहित्य|

इकाई - दो

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध पंजाब का भक्ति हिंदी साहित्य|
गुरु काव्य-धारा
राम काव्य-धारा
कृष्ण काव्य-धारा
सूफी काव्य-धारा

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध भक्तिकालीन हिंदी गद्य

इकाई - तीन

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध दरबारी-काव्य
पटियाला दरबार
संगरूर दरबार
कपूरथला दरबार
नाभा दरबार
गुरु गोबिंद सिंह का विद्या दरबार

इकाई - चार

जन्मसाखी साहित्य (पुरातन जन्मसाखी के संदर्भ में)
टीकाएं(आनंदघन के संदर्भ में)
अनुवाद एवं भाष्य (गीता के संदर्भ में)

सहायक पुस्तकें:

1. पंजाब का हिन्दी साहित्य, डॉ.हरमहेन्द्र सिंह बेदी, डॉ. कुलविन्द्र कौर, मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली |
2. पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास, चन्द्रकान्त बाली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली|
3. गुरुमुखी लिपि में हिन्दी काव्य, डॉ. हरिभजन सिंह, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली |
4. गुरुमुखी लिपि में हिन्दी गद्य, डॉ. गोविन्द नाथ राजगुरु, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली |
5. गुरु गोबिन्द सिंह के दरबारी कवि, डॉ.भारत भूषण चौधरी, स्वास्तिक साहित्य सदन, कुरुक्षेत्र |
6. पंजाब हिन्दी साहित्य दर्पण, शमशेर सिंह, 'अशोक' अशोक पुस्तकालय, पटियाला |

FACULTY OF LANGUAGES

SYLLABUS
of
M.A. HINDI (Semester: III)

(Under Continuous Evaluation System)

Session: 2020-21

The Heritage Institution

KANYA MAHA VIDYALAYA
JALANDHAR
(Autonomous)

SCHEME AND CURRICULUM OF EXAMINATIONS OF TWO YEAR DEGREE PROGRAMME

Masters of Arts (Hindi)

Semester III

Session 2020-21

Semester III								
Course Code	**Course Name**	**Course Type**	**Marks**				**Examination time (in Hours)**
			Total	**Ext.**		**CA**	
				L	**P**		
MHIL-3261	प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य	C	80	64	-	16	3
MHIL -3262	आधुनिक गद्य साहित्य	C	80	64	-	16	3
MHIL -3263	भाषा विज्ञान	C	80	64	-	16	3
MHIL - 3264	पत्रकारिता प्रशिक्षण	C	80	64	-	16	3
MHIL -3265(Opt----) (विद्यार्थी आगे लिखित विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुन सकता है)	गुरु नानक देव जी (Opt-i) सूरदास (Opt-ii) हिंदी कहानी (Opt-iii)	O	80	64	-	16	3
Total			**400**				

C-Compulsory
O-Optional

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020-21

Course Code: MHIL - 3261

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Course Outcomes :

पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी निम्नलिखित लाभ प्राप्त कर सकते हैं :

CO-1: हिन्दी के प्राचीन कवियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा उनका हिंदी साहित्य में योगदान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते है |

CO-2: हिन्दी के मध्यकालीन कवियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा भक्त कवियों का हिन्दी साहित्य में योगदान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते है |

CO-3: प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों के काव्य में आधुनिकता बोध के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

CO-4: प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों की सांस्कृतिक चेतना सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं |

CO-5:सूफी काव्य परम्परा की विशेषताओं और महत्व के सम्बन्ध में जायसी के काव्य के महत्व के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020 -21

Course Code: MHIL - 3261

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है। इसमें चार- चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा। भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों / पांच पृष्ठों में देना होगा।

इकाई -एक

व्याख्या

निर्धारित कवि एवं पाठ्य पुस्तक:

पाठ्य पुस्तक - 'काव्य मंजूषा' सम्पादक प्रो॰ सुधा जितेन्द्र ,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,2014

व्याख्या के लिए निर्धारित कवि –

1.अमीर खुसरो
2.कबीर
3.जायसी

इकाई -दो

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

अमीर खुसरो :

– अमीर खुसरो और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं
– हिंदी के आदि कवि :अमीर खुसरो
– अमीर खुसरो के काव्य की मूल संवेदना
– अमीर खुसरो के काव्य की भाषा

इकाई -तीन

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

कबीरः

– कबीर और उनका काव्य परिचय तथा विशेषताएं

– कबीर काव्य का दार्शनिक पक्ष

- क्रांतिकारी कवि कबीर

- कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण

- कबीर का रहस्यवाद

- कबीर काव्य का कलात्मक पक्ष

- कबीर की भक्ति भावना

इकाई -चार

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

जायसीः

– जायसी और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं

– सूफी काव्य परम्परा में जायसी का स्थान

– जायसी की प्रबन्ध योजना , पद्मावत का महाकाव्यत्व

– जायसी के काव्य में विरह वर्णन : नागमती का विशेष सन्दर्भ

– जायसी के काव्य में प्रेमाभिव्यंजना एवं रहस्य

– जायसी के काव्य में लोक संस्कृति

– पद्मावत का काव्य सौष्ठव

सहायक पुस्तकें:

1.आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी |

2. गोपीचंद नारंग, अमीर खुसरो का हिंदी काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |

3. रामनिवास चंडक, कबीर :जीवन और दर्शन, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी |

4. परशुराम चतुर्वेदी, कबीर साहित्य चिंतन, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद|

5. नज़ीर मुहम्मद, कबीर के काव्य रूप, भारत प्रकाशन, अलीगढ |

6. रघुवंश, कबीर एक नई दृष्टि, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद|

7. रामकुमार वर्मा, कबीर एक अनुशीलन, साहित्य भवन, इलाहाबाद|

8. मनमोहन गौतम, पद्मावत का काव्य वैभव, मैकमिलन कंपनी, दिल्ली |

9. रामपूजन तिवारी, जायसी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |

10. शिवसहाय पाठक, हिंदी सूफी काव्य का समग्र अनुशीलन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली |

11. जयदेव , सूफी महाकवि जायसी, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ |

12. डॉ.हरमहेन्द्र सिंह बेदी, कालजयी कबीर, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020 -21

Course Code: MHIL-3262

आधुनिक गद्य साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: आधुनिक गद्य साहित्य हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्य का परिचायक प्रश्नपत्र है जिसमें महादेवी वर्मा कृत 'अतीत के चलचित्र' संस्मरण साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी तत्कालीन स्त्री की स्थिति का मूल्यांकन करने में समर्थ होंगे और संस्मरण साहित्य विधा को जानने में सक्षम होंगे|

CO-2: राजेन्द्र यादव द्वारा सम्पादित कहानी संग्रह 'एक दुनियां समानांतर' में संकलित कहानियों के अध्ययन से विद्यार्थी आधुनिक हिंदी के उच्चकोटि के कथाकारों के साहित्यिक अवदान एवं कहानियों में वर्णित समस्याओं से परिचित होंगे|

CO-3: आधुनिक हिंदी साहित्य का उच्चकोटि का उपन्यास 'गोदान' प्रेमचंद की ऐसी कृति है जिसके माध्यम से विद्यार्थी तत्कालीन समाज की विसंगतियों, समस्याओं से जूझते पात्रों की अलक्षित सामर्थ्य एवं शक्ति से परिचित होंगे| इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए शोध के नवीन द्वार खुलते हैं|

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-3262

आधुनिक गद्य साहित्य

Total: 80
CA: 16
समय: तीन घंटे TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है । जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है । इसमें चार- चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा । भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों / पांच पृष्ठों में देना होगा ।

इकाई -एक

व्याख्या:
व्याख्या एवं विवेचन के लिए निर्धारित कृतियाँ -
1.गोदान -प्रेमचंद ,हंस प्रकाशन ,इलाहबाद |
व्याख्या के लिए निर्धारित पृष्ठ - पृ. 1 से 150 तक
2. एक दुनिया समानांतर - राजेन्द्र यादव ,अक्षर प्रकाशन ,दिल्ली |
निर्धारित कहानियां - बादलों के घेरे ,खोई हुई दिशाएं ,चीफ की दावत ,यही सच है ,एक और जिंदगी, टूटना,
नन्हों ,भोलाराम का जीव
3. अतीत के चलचित्र ,महादेवी वर्मा ,राधाकृष्ण प्रकाशन ,केवल पहले आठ संस्मरण (रामा ,भाभी ,बिन्दा सबिया ,बिट्टो ,बालिका मां ,घीसा ,अभागी स्त्री)

इकाई -दो

गोदान:
विधागत वैशिष्ट्य ,विकास यात्रा ,हिंदी उपन्यास और प्रेमचंद ,गोदान :कृषक जीवन की त्रासदी ,आदर्श -

यथार्थ ,जीवन दर्शन ,प्रगतिशील विचारधारा ,महाकाव्यात्मक उपन्यास, कथा शिल्प, पात्र, भाषा एवं समस्याएं|

इकाई -तीन

एक दुनिया समानांतर :

हिंदी कहानी : उद्भव और विकास ,कहानी के प्रमुख आन्दोलन ,समकालीन कहानी की विशेषताएं ,किसी निर्धारित कहानी के कथ्य सम्बन्धी प्रश्न , किसी निर्धारित कहानी के शिल्प सम्बन्धी प्रश्न ,संग्रह में निर्धारित कहानियों की सामान्य विशेषताएं |

इकाई -चार

अतीत के चलचित्र :

रेखाचित्र :स्वरूप ,तत्व एवं प्रकार ,अतीत के चलचित्र के आधार पर महादेवी के गद्यकार रूप का विवेचन ,किसी एक रेखाचित्र के कथ्य पर केन्द्रित प्रश्न , किसी एक रेखाचित्र के शिल्प पर केन्द्रित प्रश्न ,रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'अतीत के चलचित्र' का समग्र मूल्यांकन |

सहायक पुस्तकें:

1. डॉ.लाल चंद गुप्त 'मंगल', अस्तित्वाद और नयी कहानी, शोध प्रबंध, दिल्ली |
2. डॉ. देवी शंकर अवस्थी, नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली |
3. डॉ. मधु संधु, कहानीकार निर्मल वर्मा, दिनमान, दिल्ली |
4. हिंदी लेखक कोश, डॉ. सुधा जितेन्द्र एवं अन्य, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर |
5. प्रेमचंद: कलम का सिपाही, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद |
6. प्रेमचंद: हमारे समकालीन, सं.रमेशकुन्तल मेघ और ओम अवस्थी, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर |
7. महादेवी का गद्य, सूर्यप्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |
8. महादेवी और उनकी गद्य रचनाएं, माधवी राजगोपाल, रंजन प्रकाशन, आगरा |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020 -21

Course Code: MHIL-3263

भाषा विज्ञान

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी का संरचनात्मक स्तर पर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं |

CO-2: भाषा के सही उच्चारण का कौशल प्राप्त कर सकते हैं|

CO-3: समय के बदलते परिवेश के अनुसार भाषा के रूप, वाक्य और अर्थ परिवर्तन की जानकारी हासिल कर सकते हैं|

CO-4: विभिन्न भाषाओं के व्याकरणिक स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन की प्रवृत्ति पा सकते हैं|

CO-5: भाषा विज्ञान के विभिन्न व्याकरणों एवं विज्ञानों का सम्यक् अध्ययन करने में सक्षम हो सकते हैं |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020-21
Course Code: MHIL - 3263

भाषा विज्ञान

Total: 80
CA: 16
समय: तीन घंटे TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है I प्रथम भाग अनिवार्य है इसमें इकाई एक में से चार-चार अंकों के छ : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा I प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा I भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा I प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों / पांच पृष्ठों में देना होगा |

इकाई -एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र -

भाषा : परिभाषा और स्वरूपगत विशेषताएं, भाषा के विभिन्न रूप : विभाषा, मातृभाषा, साहित्यिक/ सर्जनात्मक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा, मानक भाषा | भाषा का अवृत्तिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण

इकाई -दो

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र -

भाषा विज्ञान : परिभाषा एवं स्वरूप, भाषा विज्ञान के अंग, भाषाविज्ञान का विभिन्न पद्धतियों/शास्त्रों के साथ सम्बन्ध: वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक

ध्वनि विज्ञान : ध्वनि नियम (ग्रिम निरूपित), ध्वनि परिवर्तन के कारण और दिशाएं |

इकाई -तीन

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र -

रूपविज्ञान : रूप और संरूप : सामान्य परिचय, परिभाषा व पारस्परिक अंतर, रूप परिवर्तन के कारण और दिशाएं

वाक्य विज्ञान : वाक्य का स्वरूप और लक्षण, वाक्य के निकटस्थ अवयव,पदक्रम और अन्विति, वाक्य के भेद : रचना, आकृति व अर्थ के आधार पर |

इकाई -चार

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र –

अर्थ विज्ञान : अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएं,आधुनिक भाषा विज्ञान : प्रमुख प्रवृत्तियां, रूपांतरण प्रजनक व्याकरण, व्यवस्थापरक व्याकरण, शैली विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान |

सहायक पुस्तकें

1.भाषाविज्ञान की भूमिका, डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली|

2. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, द्वारिका प्रसाद सक्सेना|

3. भाषा विज्ञान कोश, भोलानाथ तिवारी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली |

4. भाषा विज्ञान,डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद |

5.भाषा विज्ञान, कर्ण सिंह, साहित्य भंडार, मेरठ |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020-21
Course Code: MHIL - 3264

पत्रकारिता - प्रशिक्षण

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: विद्यार्थी रेडियो , टी.वी, समाचार पत्र हिन्दी विशेषग्य ,प्रोग्राम प्रोड्यूसर , संपादक, संवाददाता , अनुवादक , प्रूफ रीडर , के रूप में रोज़गार प्राप्त कर सकते हैं।

CO-2:इस डिप्लोमा से प्राप्त योग्यता के आधार पर विद्यार्थी मीडिया हेतु विज्ञापन,पटकथा,संवाद एवं गीत लेखन के व्यवसाय को भी विकल्प के रूप में अपना सकता है।

CO-3: विद्यार्थी स्वतंत्र संवाददाता एवं स्तम्भ लेखक के रूप में अपना कैरियर बना सकते हैं।

CO-4: विद्यार्थी बतौर समीक्षक अपनी पहचान बनाने में योग्य होंगें।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-lll)

Session 2020 - 21

Course Code: MHIL -3264

पत्रकारिता - प्रशिक्षण

Total: 80
CA: 16
समय: तीन घंटे TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है। इसमें चार-चार अंकों के छः : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा। भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों / पांच पृष्ठों में देना होगा।

इकाई -एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र -

पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार, हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास, समाचार पत्रकारिता के मूल तत्त्व, समाचार संकलन. तथा लेखन के प्रमुख आयाम | सम्पादन कला के सामान्य सिद्धांत: शीर्षकीकरण,
पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार पत्रों की प्रस्तुत प्रक्रिया

इकाई -दो

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र-

समाचार पत्रों के विभिन्न स्तम्भों की योजना, समाचार के विभिन्न स्रोत, संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्यपद्धति| पत्रकारिता से सम्बन्धित लेखन: सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी पत्रकारिता,
अनुवर्तन (फॉलोअप) की प्रविधि

इकाई -तीन

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र-

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता :रेडियो, टी वी, वीडियो,केबल, मल्टीमीडिया, और इंटरनेट की पत्रकारिता | प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रण कला, प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ सज्जा| पत्रकारिता का प्रबंधन :प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था |

इकाई -चार

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र-

मुक्त प्रेस की अवधारणा, लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन, प्रसार भारती, तथा सूचना प्रौद्योगिकी, प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व

सहायक पुस्तकें

1. कृष्ण बिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता, संपा. लक्ष्मीचन्द्र जैन, लोकोदय ग्रन्थ भाषा, दिल्ली |
2. राधेश्याम शर्मा, विकास पत्रकारिता |
3. श्याम सुंदर शर्मा, समाचार पत्र, मुद्रण और साजसज्जा |
4. सविता चड्ढा, नई पत्रकारिता और समाचार लेखन |
5. हरिमोहन, समाचार, फीचर लेखन एवं सम्पादन कला |
6. शिवकुमार दुबे, हिंदी पत्रकारिता: इतिहास और स्वरूप |
7. अर्जुन तिवारी, आधुनिक पत्रकारिता, वाराणसी विश्वविद्यालय |
8. रामचन्द्र तिवारी, सम्पादन के सिद्धांत, आलेख प्रकाशन, दिल्ली |
9. रमेश चन्द्र त्रिपाठी, पत्रकारिता के सिद्धांत |
10. हरिमोहन, रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता |
11. संपा. के.सी. नारायण, सम्पादन कला |
12. हरिमोहन, सम्पादन कला एवं प्रूफ पठन |
13. डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू, भारतीय प्रसारण माध्यम |
14. टी.डी. एस. आलोक, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया |
15. हर्षदेव, उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक |
16. संजीव भानावत, प्रेस कानून और पत्रकारिता |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020 - 21

Course Code: MHIL - 3265

गुरु नानक देव जी

विकल्प - एक

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: इस प्रश्न - पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सिक्खों के प्रथम गुरु के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

CO-2: गुरु नानक जी की वाणी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

CO-3: गुरु नानक जी की वाणी के माध्यम से उनके विचारों और जीवन में उनके महत्व के बारे में जानकारी हासिल कर सकते है |

CO-4: गुरु नानक जी की वाणी के माध्यम से गुरुमुखी लिपि में रचित हिंदी साहित्य के प्रति जागरूक होगें |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020 - 21
Course Code: MHIL - 3265

गुरु नानक देव जी

विकल्प - एक

Total: 80
CA: 16
समय: तीन घंटे TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है जिसमें चार- चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित छः प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा। भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों /पांच पृष्ठों में देना होगा।

व्याख्या एवं अध्ययन के लिए निर्धारित कृति : जपुजी साहिब, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर |

इकाई -एक

व्याख्या हेतु निर्धारित कृत्ति - जपुजी साहिब

इकाई -दो

गुरु नानक देव: युग और व्यक्तित्व, जपुजी साहिब का सामान्य परिचय, गुरु नानक देव जी की वाणी का वैशिष्ट्य

इकाई -तीन

गुरु नानक देव जी का सामाजिक चिंतन, गुरु नानक देव जी की भक्ति - भावना, गुरु नानक देव जी की वाणी में दार्शनिकता

इकाई -चार

गुरु नानक देव जी के काव्य में भारतीय संस्कृति के तत्व, जपुजी साहिब की भाषा- शैली एवं काव्य सौष्ठव, निर्गुण भक्त कवियों में गुरु नानक देव जी का स्थान

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)
Session 2020-21
Course Code: MHIL - 3265

सूरदास

विकल्प - दो

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: सूरदास विरचित कृष्ण लीला के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर आधारित सरस एवं भक्तिपूर्ण पदों के माध्यम से भक्ति के स्वरूप और साहित्य की सरसता को आत्मसात करने के योग्य होंगे |

CO-2: मध्ययुगीन कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय में सूरदास की भक्ति भावना और उसके आधार में निहित दार्शनिक भूमिका की समझने में सक्षम होंगे |

CO-3: सूरकाव्य में निहित संगीत, लय और गीति तत्व की विशेषता को आत्मसात करने के साथ - साथ विद्यार्थी भाषा के सौन्दर्य को समृद्ध बनाने वाले उपकरण - रस, छंद, अलंकार इत्यादि के व्यवहारिक उपयोग और सौन्दर्य को समझने में योग्य होंगे |

CO-4: सूरकाव्य के लीला तत्व और कूट पदों के ज्ञान एवं रहस्य से परिचय इस सन्दर्भ में शोध की सम्भावनाओं के प्रति विद्यार्थिओं किन रूचि प्रोत्साहित होगी |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020 - 21
Course Code: MHIL -3265

सूरदास

विकल्प - दो

Total: 80
CA: 16
समय: तीन घंटे TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है। इसमें चार- चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा। भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई एक,दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों / पांच पृष्ठों में देना होगा।

व्याख्या एवं अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तक -

सूरसागर, सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा० लि० इलाहाबाद |

इकाई -एक

व्याख्या हेतु निर्धारित पद -
विनय भक्ति - 1 से 10 तथा 17 से 24 =18 पद
गोकुल लीला - 1 से 35 =35 पद
वृन्दावन लीला - 3 से 18, 38 से 53, 145 से 155 =43 पद
उधव सन्देश - 116 से 159 =44 पद

इकाई -दो

- मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन तथा कृष्ण भक्ति
- मध्ययुगीन कृष्ण भक्ति: सम्प्रदाय एवं सिद्धांत
- कृष्ण भक्ति काव्य: विशेषताएं तथा उपलब्धियां
- सूरदास: व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- सूरकाव्य में लोक संस्कृति
- सूरकाव्य में मनोविज्ञान

इकाई -तीन

- कृष्ण भक्ति काव्य में सूरदास का स्थान
- सूरकाव्य में पुष्टिमार्गीय भक्ति
- सूरकाव्य में भक्ति साधना के अन्य रूप - दास्य, संख्य, प्रेमा आदि
- सूरकाव्य में वात्सल्य वर्णन
- सूरकाव्य में दार्शनिक पक्ष
- सूरकाव्य में निर्गुण - सगुण द्वंद्व

इकाई -चार

- सूरकाव्य में लीला तत्व
- सूरकाव्य में विभिन्न रसों की सृष्टि
- सूरकाव्य में बिम्ब, प्रतीक तथा मिथक
- सूर की काव्य भाषा: शब्द सम्पदा, पद रचना, अलंकार, छंद आदि |
- सूरकाव्य में गीति तत्व
- सूरकाव्य के कूट पद

सहायक पुस्तके:

1.कमला अत्रिय, आधुनिक मनोविज्ञान और सूरकाव्य, विभू प्रकाशन, साहिबाबाद |
2. रमाशंकर तिवारी, सूर का श्रृंगार वर्णन, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर |
3. आद्या प्रसाद त्रिपाठी, सूर साहित्य में लोक - संस्कृति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग |
4. एन.जी. द्विवेदी, हिन्दी कृष्ण काव्य का आलोचनात्मक इतिहास, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली |
5. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, सूर साहित्य, राजकमल प्रकाशम, नई दिल्ली |
6. प्रभुदयाल मित्तल, सूरदास, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद |
7. प्रभुदयाल मित्तल, सूरसर्वस्व, राजपाल एंड संज, दिल्ली |
8. ब्रजेश्वर वर्मा, सूरदास, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद |
9. रामनरेश वर्मा, सगुण भक्ति काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी |
10. मुंशीराम शर्मा, सूरदास का काव्य वैभव ग्रंथम, कानपुर |
11. हरबंस लाल शर्मा, सूर और उनका साहित्य, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ |
12. वेदप्रकाश शास्त्री, सूर की भक्ति भावना, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली |
13. शारदा श्रीवास्तव, सूर साहित्य में अलंकार विधान, बिहार ग्रन्थ कुटीर, पटना |
14. केशव प्रसाद सिंह, सूर संदर्भ और दृष्टि, संजय बुक सेंटर, वाराणसी |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020 - 21

Course Code: MHIL -3265

हिन्दी कहानी

विकल्प - तीन

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

:1-COकहानी साहित्य को आत्मसात करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है |इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी – वर्ग को कहानी के स्वरूप,विकास यात्रा, कहानी के आन्दोलनों एवं समकालीन कहानी साहित्य की विशेषताओं का विस्तृत एवं गहन ज्ञान प्राप्त होगा |

CO-2:अज्ञेय की कहानियों के माध्यम से महानगरीय जीवन की विसंगतियों से जूझते मनुष्य से साक्षात्कार कर विद्यार्थी उनकी समस्याओं से अवगत होंगे |

CO-3:भीष्म साहनी की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के समक्ष पंजाब की तत्कालीन स्थिति, विभाजन की त्रासदी से उत्पन्न संत्रास, विदेशी वातावरण में अपनी मिट्टी की महक के दर्शन होंगे |

CO-4:मन्नू भंडारी की कहानियों के द्वारा विद्यार्थी समकालीन संदर्भ में स्त्री की स्थिति, आधुनिक युग की समस्याओं से दो - चार होती, जूझती नारी एवं स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रश्नों का साक्षात्कार करेंगे |

CO-5:समग्रत: प्रश्नपत्र विद्यार्थी वर्ग के लिए आगामी शोध के लिए ज़मीन तैयार करता है |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-III)

Session 2020-21

Course Code: MHIL-3265

हिंदी कहानी

विकल्प-तीन

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है जिसमें चार- चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों/दो पृष्ठों में देना होगा । भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 1000 शब्दों /पांच पृष्ठों में देना होगा ।

इकाई –एक

व्याख्या एवं अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तक –

प्रतिनिधि कहानियां –भीष्म साहनी
मेरी प्रिय कहानियां –अज्ञेय
मेरी प्रिय कहानियां –मन्नू भंडारी

इकाई –दो

. कहानी: स्वरूप, परिभाषा, तत्व एवं प्रकार
. कहानीकार भीष्म साहनी :सामान्य परिचय
. भीष्म साहनी की कहानियों का कथ्य एवं मूल संबंध
. भीष्म साहनी की कहानियों के नारी पात्र
. भीष्म साहनी की कहानियों का शिल्प एवं भाषा
. निर्धारित संग्रह की किसी एक कहानी पर कथ्य सम्बन्धी प्रशन

इकाई –तीन

. हिंदी कहानी की विकास यात्रा
. कहानीकार अज्ञेय: सामान्य परिचय

. अज्ञेय की कहानियों में सामाजिक संचेतना
. अज्ञेय की कहानियों में मनोविज्ञान
. अज्ञेय की कहानियों का शिल्प एवं भाषा
. संग्रह की किसी एक कहानी पर कथ्य सम्बन्धी प्रश्न

इकाई -चार

. हिंदी कहानी के विभिन्न आन्दोलन
. समकालीन कहानी की विशेषताएं
. कहानीकार मन्नू भंडारी :सामान्य परिचय
. मन्नू भंडारी की कहानियां: अस्तित्ववादी चेतना
. मन्नू भंडारी की कहानियां: मनोविज्ञान और बदलता समाज
. मन्नू भंडारी की कहानियां : शिल्प और भाषा
. निर्धारित संग्रह की किसी एक कहानी पर कथ्य सम्बन्धी प्रश्न

अनुशंसित पुस्तकें:

1. हिंदी कहानी : उद्भव और विकास, सुरेश सिन्हा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली |
2. हिंदी कहानी : पहचान और परख, इन्द्रनाथ मदान (संपा.) लिपि प्रकाशन, दिल्ली |
3. कहानी: स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली |
4. नयी कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली |
5. कहानी: नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद |
6. नयी कहानी: संदर्भ और प्रकृति, देवीशंकर अवस्थी, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली |
7. समकालीन कहानी की पहचान, नरेन्द्र मोहन, प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली |
8. नयी कहानी: विविध प्रयोग, पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद |
9. हिंदी कहानी में प्रगति चेतना, लक्ष्मणदत्त गौतम, कोणार्क, दिल्ली |
10. मिथिलेश रोहतगी, हिन्दी की नयी कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, शलभ प्रकाशन, मेरठ |
11. हिन्दी लेखक कोश, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर |
12. डॉ. शिव प्रसाद सिंह, आधुनिक परिवेश और अस्तित्व, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली |
13. राम दरश मिश्र, दो दशक की कथा यात्रा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली |
14. इन्द्रनाथ मदान, हिन्दी कहानी अपनी ज़बानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली |
15. सुरेन्द्र चौधरी, हिंदी कहानी की रचना प्रक्रिया
16. परमानंद श्रीवास्तव, हिंदी कहानी की रचना प्रक्रिया, ग्रंथम, कानपुर |
17. बटरोही, कहानी: रचना प्रक्रिया और स्वरूप, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली |